सतगुरू 'वे नाम' परमहंस साहिब जी की सुरति से ओत प्रोत

1 ग्रंथों की सूची

क्रः	ग्रंथों के नाम	प्रकाशन वर्ष
1	भजन संग्रह–1 (प्रथम पुस्तक)	2013
2	भजन संग्रह–2 अमर सुरति से भरे भजन	2015
3	भजन संग्रह–3 सतगुरू जी की अमर सुरति से भरे भजन	2017
4	भजन संग्रह–4 साधकों द्वारा श्रद्धा सुमन	2017
5	अमर साग़र	2017
6	परमहंस सुरति महिमां	2019
7	**Secret Of Permament Liberation (English)** मोक्ष का भेद ग्रंथ (अंग्रेज़ी में)	2020
8	आनंद साग़र – वे नाम सुरति धारा	2022
9	गीता अमृत सार – वे नाम सुरति धारा	2022
10	अल्प मुक्ति से पूर्ण मोक्ष	2022
11	वे नाम सुरति धारा	2022

अग़ामी प्रकाषित होने वाले ग्रंथ

1 अनुराग़ साग़र
2 साहिब सतगुरू जी के अनुभव और सफरनामें
3 साहिब सतगुरू जी के कर कमलों द्वारा लिखित ग्रंथ

काल भगवन के खेल से बचो, बचावनहार एको सतगुरू 'वे नाम

2 ग्रंथ सारणी

नोट :–

साहिब सतगुरू ''वे नाम परमहंस जी'' के अग़ामी आने वाले ग्रंथ 'साहिब जी के सफरनामें', 'अल्प मुक्ति से पूर्ण मोक्ष की ओर', 'आनंद सागर', गीता अमृत सार, 'वे नाम सुरति धारा' व अनुराग़ साग़र प्रमुख हैं जो शीघ्र ही प्रकाशित होने जा रहे हैं और इसके साथ–साथ पाठकों व जिज्ञासुओं के लिए 'पराभक्ति पर आधारित', सहज सत मार्ग की भक्ति महिमां से भरपूर ग्रंथ 'अमर साग़र', 'परमहंस सुरति महिमां' और सुरति अमृत से ओत प्रोत 'साहिब सतगुरू परमहंस जी' द्वारा रचित भजनों की तीन पुस्तकें तथा अंग्रेज़ी भाषा में भी एक अदभुत ग्रंथ ''मोक्ष का भेद (Secret of Permanent Liberation)'' पूर्वतः ही प्रकाशित कीये जा चुके हैं। इनके अतिरिक्त अन्य और भी ग्रंथों की रचना अग़ामी काल में शीघ्र ही की जानी हैं।

कलयुग के इस वर्तमान काल में बिना सतगुरू साहिब ''वे नाम परमहंस जी'' की शरणी आये तथा उनसे ''वे नाम'' सब्द दात पाये बिन पूर्ण मोक्ष संभव ही नहीं। इसलिये हे हंसाथियो साहिब सतपुरूष जी की सत सुरति से ओत प्रोत ''वे नाम परमहंस जी'' द्वारा रचित इन नवीन ग्रंथों को श्रद्धा पूर्वक पढ़ें व श्रवण करें।

–0–

सतगुरू सतनाम

सत्त साहिब जी सत्त साहिब जी सत्त साहिब

3 अमृत सार

हे जगत की प्यारी जीव आत्माओं,

आप तन और मन नहीं हो, आप सब तो मूलतः साहिब सत्तपुरूष जी के अंश हंसा ही हो । हे हंसो, हम एक ही मूल से आए हैं और उसी मूल में जा समाना ही (मौक्ष) मानव जीवन का मात्र एक लक्षय है । यह महान ग्रंथ सब हंसों के लिए, सब हंसों के द्वारा सुरति सूं लिखा गया और सब हंसों को सुरति से ही समर्पित किया गया है। मूलतः यह ग्रन्थ किसी एक संप्रदाए, मत्त व धर्म का ना हो के सभी जीव आत्माओं के कल्याण हेतु समर्पित है।आज के इस आधुनिक युग में मानव समाज ने अत्यधिक भौतिक उन्नति तो कर ली, कहने को वह उन्नतशील मानव समाज ही का हिस्सा हो गया । परन्तु आज के समाज में मानव ने अपना संपूर्ण पतन ही कर डाला। भौतिकता की चकाचौंध में, 'मैं' के अहम में स्वार्थी बना मानव सब को संशय भरी दृष्टि् से देखता है। मां बाप और बच्चों के नातों में संशय, भाई बन्धु व मित्र सम्बधियों के नातों में संशय, यहां तक कि अपने जीवन साथी के साथ दिखावे का प्रेम, पर भीतर संशय ही संशय। इस संशय से भरी ज़िन्दगी में प्रेम प्रीत की भावना ही लुप्त हो गई।

यही स्वार्थ व संशय से भरा मानव समाज पूर्ण सत्तगुरू की शरण में आकर भी संशय और अहम को नहीं छोड़ता। अक्सर स्वार्थ सिद्धी करने में ही लगा रहता है तभी तो वह बारम्बार जन्म लेता है पर मौक्ष को नहीं पाता । कोई बिरला ही स्वार्थ रहित होकर संपूर्ण सत्तगुरू की शरण में आकर अपने मूल (मोक्ष) को पाता है। मानव की इस दुख भरी जन्म मरन की अवस्था से ना उभरने के कारण संपूर्ण संत्त समाज चिंतित व व्यथित और उनके उत्थान के लिए प्रयत्नशील रहता है। जगतमें संशय और स्वार्थ ना छोड़ना ही मानव के कष्टकारी आवागमण का कारण बनता है।

—0—

4 भूमिका

''वे नाम परमहंस जी'' कह रहे हैं, जो दात मैं जग जीवों को दे रहा हूं, इसे सार सब्द के नाम से जाना जाता है । संतों ने इस दात को 'सार सब्द', अक्का सब्द, विदेह नाम व मूल नाम से भी सम्बोधित किया है। सत्तपुरूष जी ने दास के तीन बार निजधाम जाने के बाद पहला 'सार सब्द' सुरति से उत्पन्न व प्रदान किया । उनके दिए हुए सब्द से सर्वथा भिन्न है । दास की पहली निजधाम यात्रा के समय स्वंय सतपुरूष जी व चार महां संतों, साहिब कबीर जी, बाबा नानक जी, साहिब रवि दास जी और संत मीरां बाई जी ने मुझ आत्मिक शरीर 'हंसा' को अत्यंत ऊर्जा प्रदान की ।

निजधाम पहुंचने पर पहला संदेश जो सतपुरूष जी ने दिया कि किसी को भी जग में बुरा मत कहना । इस बीच में लगातार साहिब सतपुरूष जी से सुरति सूं गोष्ट्ठियां होती रहीं जिनमें वो सतपुरूष सत्ता का ज्ञान और जीव आत्मांओं को जगाने हेतु दास को प्रेरित करते रहे । दूसरे दिन प्रातः लगभग तीन बजे से कुछ पहले का समय था, सतपुरूष जी दास की कुटिया में प्रकट हुए और सुरति में ही पूछा कि क्या आप बुल्ले का कथन, ''रब दा कि पाना, ऐदरूं पुटना ते इधर लाना'' को समझते हो । मैनें बड़े श्रद्धा भाव युक्त हो के सुरति में कहा, बाहर की दौड़ छोड़ के अंदर की ओर जाना ही अपने प्रीयतम को पाना है। वह आनंदित मुद्रा में मन्द मन्द मुस्कान लिए हुए सतज्ञान समझाने उपरान्त अदृष्य हो गये।

तीसरे दिन तीन बजने को कुछ समय बाकी था, अभी बस मैं उठने ही वाला था, तभी सतपुरूष जी कुटिया में प्रकट हुए, एक अदभुत प्रकाशमयी आभायुक्त रोशनी से सारी कुटिया ज्योतिमय हो गई । सतपुरूष जी आलोकिक प्रकाशमयी आभायुक्त सुरति सूं 'सार सब्द' उच्चारण करते हुए अदृष्य हो गये, यह सारी घटना दास के लेटे लेटे जाग्रत अवस्था में ही घटी। उनके दर्शन उपरांत उसी पल में उठ बैठा, सुरति से इस 'सार सब्द' को ग्रहण किया। यह अदभुत और अनोखी अवर्णित घटना इस से पहले कभी नहीं घटी । ज्यादातर संतों के पास उनके सतगुरू का दिया हुआ ही सब्द होता है, सतपुरूष जी से सर्व प्रथम 'सार सब्द' साहिब कबीर जी को ही मिला था। इस दास को ही केवल दो बार 'सार सब्द' सीधे सतपुरूष जी से मिला ।

यह ग्रंथ सतपुरूष जी की देन है, उसी को ही कलमबद्ध किया गया है। सतपुरूष जी के द्वारा बार बार प्रेरित करने पर तथा उन्हीं के आदेश से दास जग जीवों को जगाने और सतपुरूष सत्ता की महिमां का बखान कर रहा है। ये ग्‌ददी भी शुरू करने का आदेश और प्रेरणा सतपुरूष जी ने ही प्रदान की ।

—0—

5 कर्ता पुरख

'वे नाम परमहंस जी' कहत हैं :–

'' ना मैं कर्त्ता – ना कोई कर्त्ता
जो किया साहिब किया – सोहि कारणहार
हम तो केवल दास हैं – साहिब ही तारनहार
जो कुछ करें – उनकी मोज है
जो भी होता – सब अच्छा होत है
साहिब ही करन – करावनहार
हम तो केवल दासा – उनके सेवादार
वो ही तारनहार – करावे भव से पार
वे नाम भी तो – उन्हीं का नाम है
उन्हीं से कर लो प्यार – उन्हीं से कर लो प्यार''

—0—

6 ’वे नाम परमहंस जी’ कहत हैं :–

1 लिखावनहार कोई और है,
वे नाम है दास–दीन।
सतपुरूष सूं अमृत जब बरसे,
लेखनी बने हदीम ।।

2 करन करावनहार सतपुरूष हैं,
दास सतपुरूष आगे अधीन ।
वे नाम को सब कुछ सौंप कर,
परमहंस की महिमां दीन ।।

3 हम सब हंसा अमरपुर वृक्ष सूं आए,
निरंझन जिनके ढाल ।
सब हंसा पात फूल उस वृक्ष के,
खुशबू देना भूल निज काम ।।

4 वे नाम आया सतलोक सूं,
हर एक को दे पुकार ।
आओ चलें सतलोक को,
वे नाम देत पुकार ।।

–0–

7 अनमोल रतन

जा को सार सब्द दात मिल जाई।
कागा पलट हंसा बन जाई ।।

वे नाम ने सतपुरूष सूं दात है पाई,
जाके बल आत्म हंसा बन जाई।
ये मूल नाम सार सब्द कहाई,
लिखा ना जाई पड़ा ना जाई।
अक्का नाम वह दात कहलाई,
जाके बल हंसा निजघर जाई।
ता से पूर्ण मोक्ष हंसा पा जाई,
जन्म मरन की कैद मिट जाई।
बहुरि हंसा गर्भ वासा ना पाई,
सब हंसा संग रास रचाई।
अमर लोक बिन धरती पानी वासा पाई,
हर पल साहिब के दर्शन पाई।
यत्न सूं कोई ये दात ना पाई,
बिन परमहँस कोई नांहि पाई ।

जा को सार सब्द दात मिल जाई।
कागा पलट हंसा बन जाई ।।

—0—

8 प्रस्तावना

✍ आध्यात्म की दुनियां, जब से सृष्टि बनी है तभी से जिज्ञासु–जन इस दुनियां को जानने को उत्सुक हैं, वह दुनियां जिसे हम आध्यात्म या रूहानियत, जो सृष्टि रचियता को जानने की जिज्ञासा, उस रचियता को मानने या ना मानने वाले दोनों के कोतूहल का विषय रही। इतनी ढेर सारी मान्यताएं, धर्म रहनुमाओं, अवतारों, पैग़म्बरों जिनका वर्णन अलग–अलग धर्म–ग्रन्थों, शास्त्रों, उपनिषदों में असंख्य गिनती में विद्यमान है, यह सारे आराध्य एक सीमा तक (निराकार–भगवान) की त्रिलोकि तक सीमित हैं । मगर हमारे संत सतगुरू 'श्री वे नाम जी' व अनेक संतों ने जिनमें संत कबीर साहिब जी, संत रविदास जी, संत दादू दयाल जी, संत पल्टु साहिब जी, संत दरिया साहिब जी, संत तुलसीदास हाथरस जी, संत ब्रह्मानंद जी, संत मीरांबाई जी और बाबा नानक जी आदि संतों ने उस परमपिता परमेश्वर को जिसे साहिब नाम से सम्बोधित किया, को इस निराकार की सीमा से उपर बताया है, जैसे कि सभी धर्मों के ग्रन्थ व पुस्तकें एकमत हैं कि ईश्वर एक है (गाड इज़ वन) और संतों अनुसार वो मालिक, ईश्वर, निराकार की सत्ता से अलग, मोक्ष दाता, साहिब, परमपुरूष या सत्तपुरूष नाम से सम्बोधित किए गये । निराकार की भक्ति करने तक स्वर्ग (कुछ काल तक मुक्ति) और फिर जीवन, जबकि साहिब भक्ति से पूर्ण मुक्ति अर्थात मोक्ष (गर्भ से सदा सदा के लिए छुटकारा) मिलता है। सहज सतमार्ग में सतगुरू परमहँसों की महिमां अपरम्पार है, साधक सतगुरू कृपा द्वारा ही मन माया को तज कर परमहँस की अवस्था को प्राप्त होता है। इसी कारण साहिब ''श्री वे नाम परमहँस जी'' ने निज अनुभव द्वारा कलमबद्ध किये गये सभी भजनों और ग्रंथों को अपने सतगुरू परमहँस जी के चरणों में समर्पित किया है।

✍

संत 'वे नाम परमहँस जी' उन्हीं साहिब सतपुरूष जी की महिमां का गुणगान व प्रचार करते हैं। सतगुरू परमहँस जी ने आध्यात्मिक व रूहानी सफ़रनामों के अनुभवों को भजनों के रूप में अपने 'साहिब सत्तपुरूष महिमां' के प्रथम एवम द्वित्य भजन संस्करणों में कलम बद्ध तो किया ही था, परन्तु इसके बाद के अनेकों अनुभवों और साहिब सत्तपुरूष सत्ता की महिमां और दात का वर्णन जिससे कि रूहानियत के प्रति जागरूक व इच्छुक जिज्ञासु जन इसका भरपूर लाभ उठा कर मोक्ष को प्राप्त हो सकें, इसका पूरा सारांश उन्होंने अपने इस ''साहिब सत्तपुरूष महिमां'' के तृत्य भजन संस्करण में भी 'साहिब सतपुरूष जी' की सुरति द्वारा बड़ा अदभुद वर्णन किया है, ताकि सम्पूर्ण मानव समाज इन भजनों को पढ़ के साहिब महिमां को समझे, जाने और जन्म मरण के बंधन से मुक्त होके पूर्ण मौक्ष को प्राप्त हो सके।

—0—

15 मोक्ष निमंत्रण

''इस जगत में रहने वाले सभी जीवों के लिए'' !

प्यारी आत्मांओ, हम सब 'एक ही मालिक' (सत्तपुरूष/साहिब) की संतान हैं जो सर्वशक्तिमान, सर्वोपरि, सर्वगुण संपूर्ण हैं। हर जीव में उनका वास है एव्म 'सत्तलोक' के वे स्वामी हैं। हम सभी उसी एक सर्वोपरि, सर्वशक्तिमान सत्ता से ना जाने कितने अनंत काल से बिछड़े हुऐ 'भगवान काल निरंझन' (सृष्टि् अर्थात त्रिलोकि माया नगरी के रचियता) की क़ैद में पड़े हैं और अति प्रलोभित और सम्मोहित कर देने वाली मोह–माया झकड़न अर्थात बंदिश में बुरी तरहं से ग्रस्त एव्म झकड़े हुऐ हैं।

जगत के जीव अन्जाने वश 'सतपुरूष/साहिब जी' की सहज सत्ता से अनभिज्ञ और अन्जान हैं, संत शिरोमणि 'साहिब कबीर जी' ने ही सर्वप्रथम 'साहिब सतपुरूष जी' की सत्ता के रहस्य को जाना, परन्तु यह जगत उनकी महिमां को जान ना पाया। उनके उपरांत केवल आज के वर्तमान काल में सहज मार्ग सत्ता के संत सतगुरू ''श्री वे नाम परमहँस जी'' ही इस धरती पर एक मात्र ऐसे 'संपूर्ण संत' हैं जिन्हें ''सार नाम'' की दात सीधे सुरति द्वारा 'साहिब सतपुरूष जी' से ही मिली, जिससे वे जग जीवों को मोक्ष दिला कर अर्थात 'त्रिलोकि माया जाल' की क़ैद से मुक्त करा के निजघर 'सतलोक' ले जा सकते हैं अतः जहां के हम मूल निवासी हैं। ''परमश्रद्‌य सतगुरू परमहँस जी'' की वाणी अनुसार इस संसार में तो हम हंसों (आत्मांओं) को केवल भ्रमण कराने हेतु ही लाया गया था और फ़िर इसी मोहनी माया के मकड़ जाल में जात–पात, सर्गुण–निर्गुण भक्तियों, आशा–तृष्णा और स्वार्थ युक्त कर्मफल प्रालब्ध बंधन, हिन्दु, मुस्लिम, सिख, ईसाई, जैन, बौद्ध, ईत्यादि धर्मों में छल, बल व मोह पूर्वक भरमा कर उलझा दिया गया। जगत में अधिकांशतः मानव चिरकाल से किसी ना किसी की पूजा–अराधना तो जन्म–जन्मांतरों से करते चले आ रहे हैं, यथा–शक्ति, सामर्थ व आस्था–समर्पण से की गई भक्तियों के बावजूद अभी तक सभी मोक्ष से वंचित ही रहे हैं अर्थात उपरोक्त सभी प्रकार की भक्तियां हम्हें मोक्ष पथ से तो दूर ही करती चली आ रही हैं। अतः तब से लेकर वर्तमान काल तक हम अपना निजघर भूले बैठे हैं और बारम्बार इस आवागमण चक्कर में बुरी तरहं से ग्रस्त हुए फंसे है। हम सभी हंसात्मांओं के लिए इसका मूल कारण जानना तो अति आवश्यक है।

अब केवल एक प्रश्न, ज़रा हम अपने आप से पूछें कि क्या हम ऐसी उपरोक्त किसी स्थिति के लिए चिंतित हैं ? क्या हम्हें यह भरोसा है कि जहां कहीं भी हम चाहे किसी की भी भक्ति क्युं नहीं कर रहे हैं, क्या वहां से हम्हें मोक्ष मिलना संभव है ? और जहां से मिलना संभव है, क्या वहां की खोज हम्हें नहीं करनी चाहिए ? ताकि वहां पहुंच कर हम अपना ये दुर्लभ मानव जन्म का अवसर पुनः कहीं व्यर्थ खोने से बचा पाऐं ? इसके साथ ही हम यह भी समझें, परखें कि कहीं भेड़ चाल की भांति, देखा–देखी में किसी 'अंधविश्वास व आस्था' में भ्रमित तो नहीं हुए पड़े हैं ? अर्थात वास्तव में क्या हम्हें अपने मूल परमपिता से जिन्हें सहज मार्ग के संपूर्ण संतों ने 'साहिब सतपुरूष' के नाम से संबोधित किया है उनसे मिलने की जिज्ञासा है ?

ऐसे अनगिनत प्रश्नों के निवारण और जग जीवों के कल्याण के लिए ही हर युग में संपूर्ण संतों का आगमन होता रहा है अतः उसी क्रम में वर्तमान काल के पूर्ण संत ''वे नाम परमहँस जी'' पिछले सात वर्षों से अपने आलोकिक अमृतमयी प्रवचनों की वर्षा जग जीवों के आध्यात्मिक उत्थान के लिए निरंतर किये जा रहे हैं, उसी कड़ी में सतगुरू परमहंस जी का साहिब सतपुरूष जी की सुरति से ओत–प्रोत अगला प्रवचन अर्थात सत्संग नीचे दिये गये पते, समय व तिथि के अनुसार होना है :–

अति गर्व का विषय आप सब जिज्ञासु जन आत्मांओं के लिए इसलिए भी हैं कि **'संत सतगुरू परमहंस जी' 'जम्मू'** से ही हैं अतः हम्हें इसलिए भी और गर्व होना चाहिए क्योंकि अपने साधा, साधारण व संपूर्ण परन्तु अति संघर्षमयी जीवन के बावजूद इस वक्त पूरे देश के ही नहीं, इस पृथ्वी के नहीं, ब्रह्मण्ड के भी नहीं अपितु ब्रह्माण्डों के ब्रह्मण्ड के सर्वोपरि आध्यात्मिक पद पर 'वे' आसीन हैं और अपनी 45 वर्षों की निस्वार्थ निरंकार भक्ति जिसमें सदैव आगे बड़ते रहने की निरंतर जिज्ञासा के कारण 'भगवान निरंकार' से साक्षात्कार और पिछले सात वर्षों से भी अधिक समय से सहज सत मार्ग की भक्ति में भी **'साहिब सतपुरूष साक्षात्कार'** के उपरांत जग जीवों का कल्याण करने के लिए ही 'वे' निरंतर व्यथित, चिंतित और प्रयासरत हैं।

अतः जो भी जिज्ञासु जन अपने मोक्ष के लिए व अपने जीवन के मूल लक्ष्य को पाने के लिए लालायित हैं उन सभी से हम करबद्ध निवेदन करते हैं कि आप सभी सह–परिवार, पड़ोसियों व अपने जानकारों सहित साहिब सतगुरू परमहंस जी के दर्शन कर के व उनके अमृतमयी प्रवचनों को श्रवन करके अपने जीवन को सार्थक व निहाल करें। **साहिब सतगुरू ''वे नाम परमहँस जी''** के प्रवचन प्रमुखतः जीवन जीने की कला के साथ–साथ जीवन को बड़ी सफ़ाई से तजने की कला (**Art of Leaving**), हम कौन हैं, कहां से आये हैं, अंततः कहां हम्हें जाना है और सृष्टि का पदार्पन क्युं और कैसे होता है ईत्यादि इन सभी बिन्दुओं पर केंद्रित रहते हैं।

'सतगुरू सतनाम' एक आध्यात्मिक पाठशाला है जो कि पिछले सात वर्षों से निरंतर जग जीवों के मूल लक्ष्य 'मोक्ष' की प्राप्ति के साथ–साथ जीवन के अनेक पहलुओं पर निस्वार्थ भाव से कार्यरत है और साहिब सतगुरू ''**वे नाम परमहँस जी**' के संरक्षण में सहज मार्ग की सत्त–भक्ति और '**साहिब सतपुरूष जी**' के आर्शीवाद से आप सब की सेवा के लिए सदैव तत्पर एव्म प्रयासरत है।।

—0—

15क मोक्ष निमंत्रण

सतगुरू सतनाम जी

जगत मे अधिकांशतः मानव किसी ना किसी की पूजा–अराधना जन्म जन्मांतरों से करते चले आ रहे हैं। माना कि कुछ मानव मूर्ती पूजा (साकार रूप) व कुछ ऊँ, ओईम, ईक औंकार, खुदा, अल्लाह, ईश्वर व रब अथ्वा (निराकार रूप) मनन, हवन, ध्यान व पूजा करते आ रहे हैं। पर कोई तो कारण रहा कि सभी अपनी यथा शक्ति व सामर्थ से की गई पूजाओं, अराधनाओं व सज्जदों से भक्ति मार्ग से विमुख होते चले जा रहे हैं। मुख से जप, भजन, आरती, हवन, अज़ाने, मंत्र, आयतें, कलमें व श्लोक, मन से जप–तप, ध्यान भी हम्हें मोक्ष पथ पर अग्रसित नहीं होने देते। ये मन, मुख व जगत संसाधन, सभी के सभी माया रूप हैं अतः इनसे की जानी वाली भक्तियों के फलस्वरूप मिलने वाले भौग भी माया अर्थात जगत में की जाने वाली भक्तियां और भी माया में उलझा कर कभी मोक्ष की ओर जाने ही नहीं देती।

मन और मुख, शरीर व जगत संसाधनों से रहित भक्ति का भेद सहज सत्य मार्ग के पूर्ण संत सतगुरू ही दे सकते हैं। पवित्र पावन धर्म नगरी 'जम्मू' में सत सुरति से ओत–प्रोत अमृतमयी प्रवचन सुनने की बेला आई है। जहां पाक्षिक रविवार को दोपहर एक से चार बजे तक 'सतगुरू सतनाम आश्रम' में साहिब सतगुरू जी आपको मन माया व काया से परे की भक्ति अर्थात सहज सत्त मार्ग का गुप्त भेद देते हैं।

सभी पावन पुनीत आध्यात्मिक जिज्ञासु जीवात्मांओं से निवेदन है कि सभी साहिब सतगुरू 'श्री वे नाम जी' की आत्मांओं को जाग्रत कर देने वाली अमृतमयी सतलोक वाणी को सुनने के लिए निम्नलिखित पते पर पधारें।

अपना जीवन व हमारा ध्येय सफल बनाने में सहभागी बनें। सभी जीवात्माऐं इस पुनीत मोक्षदायी बेला में आदर सहित आमंत्रित हैं।

—0—

साहिब सतपुरूष जी द्वारा एक अदभुद्ध

16 आलोकिक दृष्टांत

सहज सत्त भक्ति मार्ग की धरोहर 'सत्त सुरति आनंद' और निस्वार्थ, निष्चल, विरह, वैराग़ और तड़प से ओतप्रोत भाव जो हम सब हंसात्माओं के पिता ''साहिब सतपुरूष जी'' की 'वे नाम सुरति धारा' के माध्यम से निरंतर आदि काल से हमारे निजघर सत्तलोक से प्रवाहित होते चले आ रहे हैं, जो इस बात का संकेत होते हैं कि हम उसी सतलोक आभा से उत्पन्न उसी का ही अंश हैं। ''सतपुरूष साहिब जी'' तो हम्हें सतलोक अपने असली घर वापिस ले जाने के लिये ही तो समय समय पर पूर्ण संत सतगुरू परमहंसों का आगमन इस संसार में कराते रहे हैं जिनके द्वारा वो हम्हें इस मन माया के भवसाग़र से पार कराते हैं।

हम अति भाग्यशाली हैं कि इस वक्त वर्तमान काल में हम एक नहीं अपितु दौ दौ पूर्ण संतों 'साहिब सतगुरू जी व बड़े साहिब जी' की शरण में हैं। एक अदभुद्ध आलोकिक विस्मयकारी रोमांचित कर देने वाला और ''साहिब सतपुरूष जी'' की अपने साधकों (हंसात्माओं) के प्रति प्रीत दर्शाने वाला दृष्टांत उस वक्त सामने आया जब एक फरवरी, 2022 को एक तरफ 'साहिब सतगुरू वे नाम परमहंस जी' तालाब तिल्लो आश्रम में 'बड़े साहिब जी' को सतपुरूष साहिब जी के आदेश अनुसार गद्‌दी पर विराजमान होकर आगे जगत जीवों के कल्याण हेतु कार्य करने की प्रक्रिया निभा रहे थे तो ठीक उसी वक्त दूसरी तरफ हमारे अति प्यारे आगु साधक नरेंद्र व रजनी जी की समर्पणता और प्रेम निष्ठा से प्रसन्न होकर सरवाल कालोनी स्थित उनके घर साहिब सतगुरू जी की समाधि अवस्था वाली तस्वीर के अंदर सतगुरू जी के हाथों से एक श्वेत आभा युक्त ज्योति साहिब सतपुरूष जी ने प्रज्जवलित कर के समूचे जगत को अपनी उपस्थिती का प्रमाण दिया। यह आभायुक्त ज्योत पूरे तीन दिन तक साधक नरेंद्र जी के घर में प्रज्जवलित होती रही जिसे देख कर सभी आचंभित भी हुऐ। फिर जैसे ही उन्होंने इस का ज़िक्र साहिब सतगुरू जी से किया तो साहिब जी ने इसे केवल साहिब सतपुरूष जी द्वारा अपने साधकों की श्रद्धा और समर्पणतः का प्रतीक ही बताया और कहा कि कैसे हम सबके परमपिता अपने बच्चों का ध्यान रखते हैं।

'साहिब सतगुरू जी' की वाणी अनुसार ये सब ''साहिब सतपुरूष जी'' की प्रसन्नता का प्रतीक ही है जो उन्होंने 'बड़े साहिब जी' को सतगुरू जी द्वारा ऊर्जा दात देकर आगे पूरे जगत के कल्याण हेतु सारे जगत के लिये एक संकेत दिया कि 'बड़े साहिब जी' अपार शक्तियों से ओत प्रोत हो कर इस संसार के कल्याण करने हेतु तैयार हैं।

'सतगुरू साहिब जी' की वाणी अनुसार इस अदभुद्ध आलोकिक दृष्टांत से रिहाड़ी आश्रम कुटिया की भांति साधक नरेंद्र जी का घर भी अमर हो गया है जहां साक्षात सत्तपुरूष जी ने स्वयं आकर ज्योति प्रज्जवलित की हो। और ये सब इसलिये भी संभव हो पाया है कि साधक नरेंद्र जी के घर में नित्य प्रतिदिन पूर्ण श्रद्धा भाव से सिमरन और आरती हुआ करती है और ये सब कुछ पूरे प्रेम भाव से बिना किसी संसारिक मांग के निस्वार्थ भाव से होता है, और जहां पूर्ण समर्पणतः हो वहां 'साहिब सतपुरूष जी' तो प्रकट होंगे ही ना। क्योंकि 'वे नाम' सुरति धारा कोई पंथ, धर्म अथ्वा आध्यात्मिक संस्थान नहीं अपितु समूचि मानव जाति और अन्य जिज्ञासुओं के लिये एक सुरति प्रवाह ही है जो सत्त को जानने और सहज भक्ति मार्ग प्रशस्थ करने के लिये निरंतर बहे जा रहा है और ये प्रवाह कभी भी समाप्त नहीं होगा। सत्त की सत्ता कभी लुप्त हो ही नहीं सकती।

हालांकि निरंकार भगवन की ये त्रिलोकि माया आलोकिक, अविष्कारिक तथा चमत्कृतिक विस्मय कर देने वाली घटनाओं से भरी पड़ी है। ठीक इसी प्रकार निरंकार दायरे की सर्गुण व निर्गुण भक्तियां करने वाले संत, ऋषि मुणि व गुरूआजन भी ऋद्धि सिद्धियों द्वारा चमत्कार दिखाने की होड़ में लगे रहते हैं क्योंकि इस त्रिलोकि की परम मोहिणी माया का एकमा़त्र लक्ष्य चकाचौंध मन भावन विस्मय कर देने वाली घटनाओं से आत्म सुरति को भ्रमित करना है। इन सब से परे सहज सतमार्ग के पूर्ण संत सतगुरू स्वयं भी पूर्ण जाग्रत अवस्था में पूर्ण सुरतिवान होते हैं अर्थात वे काया में रहते हुए भी पूर्ण मोक्ष की अवस्था में होते हैं तथा वे अपनी शरण में आने वाले शरणागत को भी विदेह सब्द (सार नाम दात) देकर पूर्ण सुरतिवान बनाकर मोक्ष पथ पर अपने संग निजघर ले चलते हैं।

एक ओर निरंकार दायरे में जहां अनगिनत चमत्कारी घटनाऐं आये दिन जगत गुरूआजन और ऋद्धि सिद्धियों से युक्त भक्तजन दर्शाते रहते हैं जैसे

बड़े–बड़े प्रसिद्ध गुरूआजनों द्वारा हाथों से बबूती निकालना, मीठा जल अथ्वा कोई पदार्थ प्रकट कर देना व भूत–प्रेतों से निजात दिलाना ईत्यादि। वहीं दूसरी ओर ठीक इसके विपरीत सहज सत्य मार्ग के ''पूर्ण संत साहिब सतगुरू'' एक दम शांत, एकांतवास में रहते हुऐ आत्मां के मूल परमपिता परमात्मां ''साहिब सतपुरूष जी'' की भक्ति में लीन रहते हैं। साथ ही साथ वह मन माया, चमत्कारों, ऋद्धि सिद्धियों और करामातों से दूरी बनाये रखते हैं क्योंकि वह पूर्ण सुरतिवान अवस्था में होते हैं।

साहिब सतगुरू जी की वाणी अनुसार प्रीत से ओत प्रोत यह अदभुद्ध आलोकिक प्रेरणादायक घटना स्वयं साहिब सतपुरूष जी की आभा द्वारा ही घटित हुई। इसमें मैनें व बड़े साहिब जी ने कुछ नहीं किया।

साधक रजनी जी के अनुसार ये दृष्य अति अविस्मरणिय था जो इस प्रकार है :–

दिनांक एक फरवरी, 2022 मंगलवार का दिन था, मैं साहिब सतगुरू जी के फोन की प्रतीक्षा कर रही थी क्योंकि पिछले दो दिन से मेरी आत्म सुरति साहिब जी के चरणों में लीन उन्हीं के ज्योति रूप के दर्शन कर रही थी। हम सुबह साहिब जी के सिमरन उपरांत आरती कर रहे थे तभी ध्यान देते हैं कि साहिब जी की समाधि अवस्था की तस्वीर के भीतर उनके हाथों से एक श्वेत ज्योर्तिमय उर्जा उपर की ओर उठ रही थी। आश्चर्यचकित होकर हम ज्योति को देखते रहे फिर आरती समाप्त कर दी। पुनः रात की आरती के वक्त अभी भी वह श्वेत उर्जा साहिब जी के हाथों से उपर की ओर निरंतर उठ रही थी जो कि पूरा दिन निरंतर उसी प्रकार प्रज्जवलित हो रही थी। तीन फरवरी सुबह तक वैसी ही निरंतर ज्योति प्रज्जवलित होती रही। मैं, अंदर से एक विचलित परन्तु श्रदेय भाव से भरी हुई थी कि साहिब जी आप से दौ दिन से फोन पर भी बात नहीं हुई थी तथा इस घटना के बारे में किसी से भी कोई बात नहीं कर पाई। तीन फरवरी लगभग दिन के ग्यारहां बजे साधक अजय जी का फोन आया तो मैने उनसे इस वृतान्त के बारे में विस्तारपूर्वक चर्चा की। साधक अजय जी ने कहा कि आप उस ज्योति की तस्वीर लेकर मुझे भेजो। मैने अपने फोन से तस्वीर उन्हें भेज दी। तस्वीर देखने पर वो भी अभिभूत हुऐ साथ ही उन्होंने कहा कि आप साहिब जी के फोन की प्रतीक्षा ना करें और शीघ्र ही उन्हें स्वयं फोन कर के इस घटना के बारे में उन्हें विस्तारपूर्वक अवगत कराऐं। अजय जी का फोन काटते ही जैसे ही मै फोन करने के लिये उठी, इसी अंतराल में सहसा साहिब जी का ही फोन मुझे आ गया तो मैने सारा वृतान्त उनसे विस्तार पूर्वक सुनाया।

''साहिब सतगुरू जी ने बताया कि मुझे ''साहिब सतपुरूष जी'' इस चौले को त्याग कर दूसरे चौले में जाने का आदेश दे रहे थे और साथ ही साथ मैनें 'बड़े साहिब जी' को गद्दी भी सौंप दी है, अब से 'बड़े साहिब जी' ही इस गद्दी के मालिक हैं। मैं अब उनकी सेवा सबूरी में रहकर सभी कार्य करूंगा। जब ये घटना घट रही थी, इसी के प्रतिबिंब स्वरूप 'साहिब सतपुरूष जी' ज्योति रूप धारण करके मेरी इस समाधि अवस्था तस्वीर में दर्श दे रहे थे''। फिर मैने साहिब जी से कहा कि पिछले दौ दिन से प्रज्जवलित आलोकिक ज्योति अभी भी निरंतर प्रकाशमान है। साहिब जी से आज्ञा लेकर मैने इस ज्योति की तस्वीर उन्हें फोन पर भेजी जिसे देखते ही साहिब जी गद्गद हो उठे। साहिब सतगुरू जी के मुखारबिंद से पुनः ये शब्द उच्चारण हुऐ कि ये ज्योति के माध्यम से ''साहिब सतपुरूष जी' अपना संदेश दृष्टांत रूप में दे रहे हैं कि सहज मार्ग के पूर्ण सतगुरू जी ने दूसरे संत सतगुरू जी को गद्दी सौंप दी है, इस पूरी प्रक्रिया का यही संदेश था''।

'सतपुरूष साहिब जी' की अपार कृपा से ये अदभुद्ध आलोकिक घटना दृष्टिगौचर हुई। उधर 'साहिब सतगुरू जी' 'बड़े साहिब जी' को अपनी ऊर्जा प्रदान कर रहे थे और 'बड़े साहिब जी' बड़ी श्रद्धा पूर्वक उस ऊर्जा को ग्रहण कर रहे थे। इधर 'साहिब सतगुरू जी व साहिब सतपुरूष जी' की ऊर्जा साहिब जी की समाधि अवस्था की तस्वीर में हम्हें दर्श दे रही थी। इसके उपरांत उधर आश्रम में मोबाईल फोन पर ही 'साहिब सतगुरू जी' ने उस ज्योति रूप के दर्श सबसे पहले 'बड़े साहिब जी' और श्राविका जी को कराये। फिर साहिब 'सतगुरू जी' ने अपने मुखारबिंद से आदेश दिया कि इस ज्योति पुण्झ की तस्वीर सभी साधकों को भी भेजो ताकि सब साधक भी इस ज्योति के दर्श कर सकें। साथ ही कहा कि इस धरा के सभी जीवात्मां 'साहिब सतपुरूष जी' की सत सुरति आभा ज्योति रूप के दर्शन पायें। 'साहिब सतगुरू जी' ने ये भी कहा कि अब ये ज्योति धीरे धीरे स्वयं ही लुप्त हो जायेगी और ठीक वैसा ही हुआ, कुछ ही घंटों में यह प्रज्जवलित ज्योत धीरे धीरे समाधि अवस्था की तस्वीर से लुप्त हो गई। 'साहिब सतगुरू जी' का ये साक्षात संदेश था कि 'बड़े साहिब जी ने' 'साहिब सतपुरूष जी' की धरोहर 'साहिब सतगुरू जी' से ग्रहण कर ली है।

'साहिब सतगुरू जी' पल पल अपने सत सुरति अनुभव की वर्षा करते रहते हैं, 'साहिब सतगुरू जी' हम अति भाग्यवान हैं जो आप ने हम्हें दर्श दिये, अपनी कृपा हम सभी साधकों पे बनाये रखना।

15 फरवरी, 2022 को मंगलवार 'साहिब सतगुरू जी' का पुनः फोन आया कि मैं 'साहिब सतपुरूष जी' के आदेशानुसार उस स्थान को नमन करने और शीष निवाने के लिये आ रहा हूं, जहां मेरे 'सतपुरूष जी' ज्योतिपुण्झ रूप में प्रकट हुऐ थे। शाम को साढे चार बजे वह शुभ घड़ी भी आ गई जिसका मैं बड़ी बेसब्री से श्रद्धापूर्वक पलकें बिछाये प्रतीक्षा कर रही थी। मेरे 'साहिब सतगुरू जी' ने फिर मुझे आचंभित करते हुऐ अपने संग संग 'बड़े साहिब जी' को भी लाया। आज की शुभ बेला में मैनें 'बड़े साहिब जी' संग–संग 'सतगुरू जी' के दर्श करने के उपरांत दोनों के चरणों में प्रणाम करके कहा कि इस जन्म में मैनें जीते जी ही निजधाम पा लिया है। 'साहिब सतगुरू जी' आप ने मेरे अंतःकरण में सुरति से बता दिया कि जीते जी मोक्ष पाना क्या होता है। आज मुझे आप ने मेरे निवास स्थान पर आकर जो दौलत प्रदान की उसका उपकार मेरे आने वाली पीढ़ियां भी धन्यवाद और नमन करें तो भी वे नहीं चुका सकती। साहिब जी आप दोनों जहां पर विराजमान होंगे वह स्थान निजधाम ही तो हो जाता है, ये भाव भी प्रकट हुऐ।

''धरती पर साक्षात सतगुरू जी आप का आना,
इस धरती के जीवों का मुक्ति मोक्ष पाना'' ,

–0–

17 विवाह संस्कार विधि (पद्यत्ति)

सहज सत्तमार्ग अनुसार विवाह रस्म संस्कार गृहस्थ आश्रम वृद्धि के लिये अनिवार्य है। इस सृष्टि् की नियमित वृद्धि व इसे सुचारू रूप से चलायेमान रखने के लिये गृहस्थ आश्रम का अहम योगदान है जिसके लिये विवाह रस्म का अनुष्ठान किया जाता है। सनातन विधि अनुसार विवाह रस्म में सात फेरे लेकर सात जन्मों तक साथ निभाने के वचन लिये जाते हैं परन्तु मानव जीवन तो मोक्ष के लिये मिला है ना की बारम्बार जमने मरने के लिये।

सहज सत्तमार्ग की विधि अनुसार इस विवाह पद्यत्ति में एक ही फेरा लिया जाता है क्योंकि पूर्ण सतगुरू को धारण कर के जीव इसी जीवन में मोक्ष प्राप्त करे, यही मनुष्य जीवन का मूल लक्ष्य होता है। इसी उपलक्ष्य में निम्नलिखित नियमों का पालन करें :–

तीन बार सब्द–सिमरण के उपरांत वर वधु को एक दूसरे को जय माला डालनी है तथा पुनः तीन बार सिमरण के उपरांत अंगूठी पहनानी है।

एक फेरा – इसी जन्म में पूर्णतः साथ निभाने का वचन (ये फेरा साहिब सतगुरू जी के अथ्वा उनके समाधि अवस्था वाले चित्र के इर्द–गिर्द ही लिया जाता है)।

एक फेरे उपरांत वर वधु की मांग में सिंदूर भरने तथा माथे पर बिन्दी लगाने की रस्म अदा करे।

तेरहं वचन

तेरहं वचन	—	जीवन भर निभाने का संकल्प, यह संकल्प सतगुरू जी द्वारा अथ्वा आगु साधक जी द्वारा दिलाये जायेंगे :—

1	सत्य बोलना	—	मनसा, वाचा, कर्मणा
2	विश्वास	—	हर परिस्थिति में एक दूसरे पर विश्वास करना
3	प्रेम भाव	—	हर समय प्रेम भाव से कहना सुनना
4	नेकी की कमाई	—	ईमानदारी से धन अर्जित करना
5	ईच्छा रहित	—	सुरति (भक्ति भाव) में रहना
6	चोरी से परहेज़	—	चोरी से कौसों दूर रहना
7	जुअे से परहेज़	—	जुअे अथ्वा शर्तों से दूर रहना
8	नशे से परहेज़	—	शराब व नशीले पदार्थों से सदा दूर रहना
9	मास से परहेज़	—	मांस मछली का सेवन कभी ना करना
10	मैत्री भाव	—	सभी को मैत्री भाव से देखना
11	एक नारी	—	एक नारी सदा ब्रह्मचारी रहना
12	साथ ना छोड़ना	—	सुख दुख अमीरी ग़रीबी में साथ निभाना
13	गुरू (सतगुरू)	—	हर सुख दुख में सतगुरू जी से परामर्श करना

नोट :— शादी के लिये सामिग्री :—

दौ जय—माला, बिन्दी, सिंदूर, मंगल सूत्र व दौ अंगूठियां किसी भी दातु की

—0—

18 देह संस्कार विधि

1. सर्वप्रथम मृत्तक शरीर त्यागने वाले के घर पर फोन से संपर्क करने के उपरान्त उनसे मिलकर जानकारी ग्रहण करें कि क्या वे सहज सत्तमार्ग विधि से देह संस्कार करना चाहते हैं अथ्वा संसारी रिती से।

2. जिन मृतकों के परिवार संसारिक विधि को अपनाते हैं, उनके यहां हमारी पद्यति के अनुसार कोई बाधा नहीं होगी और ना ही हमारी ओर से कोई सहयोग होगा।

3. अगर संसारिक विधि से देह संस्कार प्रक्रिया होती है तो साधकजन इसके लिये वे पूर्णतः स्वतंत्र हैं कि वे संस्कार में जायें या ना जायें, साथ ही जो साधक संस्कार स्थल पर या मृतक के घर में जाते हैं, वे वहां केवल अपनी उपस्थिति ही दर्ज करें। वे वहां किसी भी प्रकार के रिती रिवाज़ों व अनुष्ठान में हस्तक्षेप ना करें और ना ही किसी भी प्रकार से भागीदार बनें। केवल सहानुभुति ही पर्याप्त है।

4. सहज सतमार्ग के सतगुरू जी अनुसार हमारा संबंध मृत्तक के शरीर से ना होकर उसकी आत्मां से होता है। देह त्यागने वाला साधक सार–सब्द ग्रहण करते ही सतगुरू कृपा सूं मोक्ष पथ का पथिक बन जाता है।

5. संस्कार स्थल व मृत्तक के घर में किसी भी आध्यात्मिक व संसारिक वाद विवाद में कोई भी साधक शामिल ना हो। और ना ही उन्हें किसी भी प्रकार का उल्लाहना व सलाह देने की चेष्ठा ना करें।

अगर कोई साधक परिवार सहज सत्तमार्ग पद्यत्ति व विधि अनुसार संस्कार प्रक्रिया के लिये तैयार हो जाये तो वे निम्नानुसार कार्य विधि का

पालन करें :–

1. मृत्तक के परिवार जनों से पूर्ण सहमति उपरांत सर्व प्रथम साहिब सतगुरू परमहंस जी को सूचित किया जायेगा।

2. साहिबन आदेशानुसार देह त्यागने पर परिवार जनों व संबंधियों द्वारा उसके वियोग में रोना साहिबन मर्यादा विरूद्ध है क्योंकि जीवात्मां केवल एक शरीर त्याग कर दूसरे शरीर को ग्रहण करती है, मरती नहीं। यह तो आत्मां का नियमित कृत्य मात्र है। इसलिये सभी साधकजन स्वयं भी शांत रहें व दूसरों को भी शांत रहने की प्रेरणा प्रदान करें।

2. सतगुरू साहिब जी अगर संग होते हैं तो अति उत्तम, अन्यथा चारों परिवार (साधक रजनी, रोमेल, अश्वनी व अजय जी श्वेत वस्त्रों में) संस्कार में सम्मलित्त होंगे। कोई आये ना आये सारे निज कार्य परे रख कर उपरोक्त चारों साधक आगु साधक नरेंद्र जी की अगुआई में उपस्थित हो कर संस्कार विधि को पूर्ण करेंगे। साहिब सतगुरू जी के आदेशानुसार उपरोक्त सभी साधक कठोरता से इस प्रक्रिया को पूर्ण करने में सहभागी बनें।

3. घर से श्मशान भूमि की ओर निकलने से पूर्व देह को श्नान कराना अथ्वा नवीन वस्त्र धारण करवाना अनिवार्य नहीं है।

4. केवल एक किलो हवण सामिग्री ही पर्याप्त है (आवश्यकता अनुसार हवण सामिग्री बड़ाई जा सकती है)।

5. कोई घी, चन्दन ईत्यादि अथ्वा किसी भी और पदार्थ की देह संस्कार विधि में कोई आवश्यकता नहीं है।

6. सतगुरू साहिब जी अगर संग हों तो अति उत्तम अन्यथा आगु साधक नरेंद्र जी की अगुआई में सभी साधक जन तीन बार ''सतगुरू सत्तनाम ! सत्त साहिब जी – सत्त साहिब जी – सत्त साहिब जी'' का मुख से उच्चारण करते हुऐ केवल सामिग्री की एक ही आहुति मृत्त शैया पर डालेंगे। इसके उपरांत परिवार के

संबंधि तथा सभी उपस्थित जन आहुति दे सकते हैं।

7. चिता को मुखाग्नि मृत्तक के परिवार से कोई साधक देगा। अगर उनके परिवार में कोई दीक्षित साधक ना हो तो परिवार का कोई भी अन्य सदस्य मुखाग्नि देने के लिये स्वतंत्र है। मृत्तक के परिवार का सदस्य ही मुखाग्नि देगा।

8. अगर साहिब सतगुरू जी उपस्थित हों तो सभी साधकजन सतगुरू जी संग प्रार्थना (सतगुरू जी की आरती) पूर्ण श्रद्धा से करेंगे, अन्यथा आगु साधक नरेंद्र जी की अगुआई में ही प्रार्थना (सतगुरू जी की आरती) की जायेगी।

9. प्रार्थना के उपरांत एक बार ''सतगुरू सत्तनाम ! सत्त साहिब जी–सत्त साहिब जी–सत्त साहिब जी'' तथा साहिब जी कौटि कौटि प्रणाम अपने चरणों में दो स्थान–अपने चरणों में दो स्थान–अपने चरणों में दो स्थान का उच्चारण किया जायेगा।

इसी के साथ घर वाले सभी को धन्यवाद सहित विदा करेंगे।

नोट :– सहज सत्तमार्ग पद्य्त्ति अनुसार कोई दसवें अर्थात मासिक की रस्म नहीं होगी।

1. तीसरे दिन प्रातः निष्चित किये गये समयानुसार अस्थियां सैंचित्त की जायेंगी। चूंकि इस सृष्टि् के सभी दिन और वार शुभ ही हैं इसलिये दिन और वार का कोई भी विचार नहीं किया जायेगा।

2. अस्थियां सैंचित करने के लिये घर से कपड़े की थैली, सुगंध हेतु धूप, अगरबत्ती तथा गाये का गौबर साथ ले जाना आवश्यक है। पूर्व विधियों अनुसार किसी धागे, लकड़ी की किल्लियां व अन्य किसी भी प्रकार की वस्तु की आवश्यकता नहीं है।

3. सर्व प्रथम साधक जनों द्वारा अंदर से साहिब जी का आवहान करने के उपरांत प्रार्थना (सतगुरू जी की आरती) की जायेगी, उसके उपरांत अस्थियां सैंचित की जायेंगी।

4. श्मशान घाट से अस्थियां सैंचित करने के उपरांत ये सीधे ही अखनूर स्थित

पतित पावन चंद्रभागा (चिनाब) नदी के शुद्ध जल में विसर्जित की जायेंगी।

5. चिनाब नदी पहुंचने पर तीन बार ''सतगुरू सत्तनाम ! सत्त साहिब जी – सत्त साहिब जी – सत्त साहिब जी'' का उच्चारण करके अस्थियां प्रवाहित की जायेंगी। अस्थियां प्रवाहित करने के उपरांत सतगुरू साहिब परमहंस जी व सतपुरूष साहिब जी के प्रेम पूर्वक उद्‌घोष :– साहिब जी कौटि कौटि प्रणाम अपने चरणों में दो स्थान – अपने चरणों में दो स्थान – अपने चरणों में दो स्थान के साथ सभी साधक जन विदा होंगे।

6 सहज सत्त भक्ति मार्ग / परा भक्ति / बृहंगा मत्त पद्यत्ति अनुसार अस्तियां विसर्जन उपरांत किसी भी प्रकार की कोई रस्म होती ही नहीं, (क्युंकि आत्म तो पंच तत्वों से परे है) कोई दिवस मनाना अनिवार्य नहीं होता।

7. फिर भी भावना स्वरूप परिवारिक जन दस दिन व एक वर्ष उपरांत श्रद्धांजली–रस्म सभी साधक–जनों द्वारा उन के घर में साहिब सतगुरू जी का सत्संग (Audio or Video) कर सकते हैं। कोई प्रसाद अथ्वा भौज कोई भी साधक ग्रहण नहीं करेंगे, परन्तु घर परिवार वाले अपने दूसरे संबंधियों के लिये भौज ईत्यादि करने के लिये स्वतंत्र हैं। सत्संग के उपरांत ''सतगुरू सत्तनाम ! सत्त साहिब जी – सत्त साहिब जी – सत्त साहिब जी'' का उच्चारण करके व सतगुरू साहिब परमहंस जी व सतपुरूष साहिब जी के प्रेम पूर्वक उद्‌घोष :– साहिब जी कौटि कौटि प्रणाम अपने चरणों में दो स्थान – अपने चरणों में दो स्थान – अपने चरणों में दो स्थान का उच्चारण करते हुऐ सभी साधकजन वहां से विदा होंगे।

–0–

19 'सत्तपुरूष निवास' (मंदिर)

जगत में मुख और मन से मन रूपी देवी देवताओं की पूजा भक्तियां और अराधनाऐं की जाती हैं, इसलिये जगत में पूजा स्थलों को मन–प्रतीक मंदिर कहा जाता है। सहज सत्त भक्ति मार्ग में मन रूपी ईष्ट व मन से परे का भक्ति मार्ग है। इस मार्ग में जीवात्मां शुद्ध होकर हंसा रूप धार कर अपने मूल परमपिता परमात्मां ''साहिब सत्तपुरूष जी'' में जा समाता है अर्थात मोक्ष को पा जाता है।

'वे नाम सुरति धारा'

वर्तमान युग में साहिब सतपुरूष भक्ति धारा को संत शिरोमणि 'वे नाम' परमहंस जी निरंतर अपनी अमृतमयी वाणी प्रवचनों से प्रज्जवलित किये हुए हैं। उन्हीं के अमृतमयी प्रवचन श्रृंख़्ला को **'वे नाम' सुरति धारा** से जाना जाता है।

साहिबन कुट्टिया एवं साहिबन हाल

सतगुरू 'वे नाम' परमहंस साहिब जी की वाणी अनुसार 'वे नाम' परमहंस जी की तपोस्थली रिहाड़ी आश्रम को आज से **साहिबन कुट्टिया** नाम से प्रसिद्धी पायेगा। साहिबन कुट्टिया रिहाड़ी में साहिब सतगुरू जी ने दोनों ''सार नाम व सुरत सब्द'' साहिबन सत्तपुरूष जी से सुरति सूं ग्रहण किया तथा इसी साहिबन कुट्टिया में साहिब जी ने निजधाम के संतों के दर्शन पाये।

इसी प्रकार से तालाब तिल्लो सत्संग आश्रम को 'साहिबन हाल' के नाम से जाना जायेगा। इन दोनों आश्रम में ''साहिब सत्तपुरूष'' जी का सदा वास रहेगा। साहिब सतगुरू जी की वाणी अनुसार 'साहिबन कुट्टिया और साहिबन हाल' अपने नाम से जगत में प्रसिद्धी पायेंगे। इन दोनों आश्रमों को **निजधाम के मंदिरों** के नाम से भी युगों–युगों तक जाना जायेगा।

—0—

20 मूल भाव

जग के सभी जीव, कायाधारी देह नहीं, वे चंचल मन माया नहीं, वे काया व मन–माया वशिभूत आत्म भी नहीं, 'आत्म' तो पूरी तरहं से प्राधीनता वशिभूत निरंकार की मन रूपी त्रिलोकि की सम्मोहन भरी माया में डूबी हुई है और ऐसी वशिभूत हुई है कि सर्वसत्ता रूपी साहिब सत्तपुरूष जी का अंश निज–हंसा–रूप भुलाऐ बैठी है।

देखो, कैसा विचित्र व अनोखा महापाश बंधन है, चन्द वर्षों के जीवन की माया उसे ऐसा भ्रमित किए है जिसमें 'मैं' और 'मेरी' के महां प्रपंच रूपी रंग–मंच में ऐसी डूबी हंसा, निज को ना आत्मां, नां काया अपितु मन रूपी इन्द्रियों की चाह पूर्ती करने का एकमात्र साधन बन के रह गई है। पहले काया अर्थात 'मैं', फिर 'मेरी' अर्थात परिवार, मनुष्य जन्म तो मनुष्य परिवार में 'मैं' और 'मेरे', फिर अगला जन्म पशु का जिसमें 'मैं' पशु व पशु–परिवार 'मेरा', इससे भी आगे अगर पक्षी या 'जल–जीव' हों तो, 'मैं' परिन्दा या मच्छ व वह परिवार 'मेरा'। देखा 'मैं' और 'मेरी' का खेला !

क्रूर माया रंग–मंच बदले ! कभी मानव, कभी पशु, कभी पक्षी तो कभी जल–चर, किरदार तो बदले पर जीव कभी भी निज को जानने की इच्छा ही नहीं जगाता। जैसे राम के किरदार में राम और रावण के किरदार में रावण बना, राम का पात्र बना तो पूजा–पाठी जप–तप दान–पुण्य व सात्विक कर्म करने वाला बना, रावण बना तो अपहरण बलात्कार कातिल मांसाहारी रिश्वतखौर व महा लौभी बन जाता है। मानव सब कुछ जानते हुए भी जिस भी किरदार में उतरता है वैसा ही आचरण करता है, रंगमंच में किरदार निभाने के बाद घर भी जाना है अर्थात तन तज कर मृत्यु को प्राप्त होना है, पर नां जी नां ! मूर्खमति मूढ़ मानव तो निज को भूला अपने को राम व रावण ही समझ जग में तड़प रहा है और दूसरों को भी तड़पाये जा रहा है। हे भाई, तूं किसका शौषण कर रहा है और तेरा शौषण करने वाला कौन ?

सभी जग–जीव स्वंय सत्तपुरूष जी के निज अंश 'हंसा' हैं। तभी तो निज हंसा–रूप भूला मानव जग–माया को लगातार बड़ाये जा रहा है। जगत में केवल इस काया को ही तो ज़िन्दा रखना है अर्थात इसके निर्वाह के लिए माया कमाना जरूरी तो है, परन्तु निर्वाह हेतु दो रोटी कमाने से अधिक माया तो बंधन ही है भाई ! यही नां–समझी ही गहरी नींद है। मानव भ्रम–वश कभी कभार पूजा पाठ जप तप व सजदे करता भी है तो अपने लिए माया रूपी सुख सुविधाऐं पाना ही उसका एकमात्र उद्धेष्य होता है। वह जिन जिन जग गुरूओं की शरणी में गया भी तो वे गुरू भी मन तरंग के वश में ही पड़े हुए मिले। ऐसा भी नहीं कि जगत गुरू अपने भक्तों को कुछ भी नां दे पाते हों, परन्तु कोई कोई श्रद्धा व भक्ति से भरपूर शिष्य ही भक्ति कर स्वर्ग या सुन्न लोकों में स्थान (अल्प–मुक्ति) पाते हैं तथा कर्म फल समाप्ति उपरांत आवागमण में वापिस लौट आते हैं।

सहज मार्ग के पूर्ण संत साहिब सत्तपुरूष जी से साक्षात्कार उपरांत उन्हीं द्वारा

प्रदान की हुई सुरति दात (सब्द) साधकों को देकर उनका उद्धार कर रहे हैं और आगे भी करते रहेगें। इस क्रम में साहिब कबीर जी, साहिब रविदास (रे–दास) जी, साहिब दादु दयाल जी, साहिब तुलसी दास हाथरस जी, साहिब ब्रह्मानंद जी, साहिब धर्मदास जी, संत दरिया साहिब जी, संत मीरांबाई जी, बाबा नानक जी, साहिब मधु जी तथा अन्य पूर्ण संतों ने मानव को मन तरंग से मुक्त करा के पूर्ण मुक्ति अर्थात मोक्ष पद की ओर जीवों को अग्रसित किया।

आज के वर्तमान युग में सर्वश्रेष्ठ सहज मार्ग के पूर्ण संत, साहिब श्री 'वे नाम' परमहंस जी इसी पावन पुनीत कार्य श्रृंखला को आगे बड़ाते हुए जग जीवों के कल्याण हेतु प्रयासरत हैं। बिन सहज मार्ग के पूर्ण सत्तगुरू की शरणी जाये कोई मोक्ष पा ही नहीं सकता। जगत गुरूओं द्वारा दीक्षा में प्रचलित शब्द या ग्रंथों में पहले से ही लिखित शब्दों को ही दिया जाता है। पर सहज सत्तमार्ग के संत सत्तगुरू साहिब सतपुरूष जी से सुरति द्वारा ग्रहण विदेह सब्द (सार–सब्द) ही दीक्षा में प्रदान करते हैं। यह सब्द बोल भाषा व लेखनी में नहीं आता, तभी तो इसे सब्द विदेह कहते हैं। सब्द विदेह में स्वंय सत्तपुरूष जी का वास होता है जिसके सिमरन से जीव निरंकार की मोहनी मन माया से मुक्त होकर अपनी आत्म मैल तज, हंसा रूप पा के मोक्ष को पा जाता है और आवागमण से मुक्त हो सत्तलोक में समाहित हो जाता है।

वर्तमान युग में सत्तगुरू श्री 'वे नाम' परमहंस जी की शरणी आये बिन पूर्ण मोक्ष संभव ही नहीं। परन्तु भ्रमित हुआ जग जीव माया को तजना ही नहीं चाहता। जबकि जग जीवों को माया से मुक्त करने का ही एकमात्र मूल भाव लिये साहिब श्री 'वे नाम' परमहंस जी हर पल लगातार प्रयासरत हैं ।

इसलिए हे प्यारी आत्माओ !

साहिब श्री 'वे नाम' जी की शरणागत आ,
अहम तज और सब्द सुरति पा कर हंसा बन मोक्ष को प्राप्त करो।

—0—

21 निरंकार–त्रिलोकी महिमां

निरंकार भगवान की महिमां अत्यन्त महान व स्मरणिय है। निरंकार भगवान साहिब सतपुरूष जी के सब्द सूं प्रकट हुए तथा घौर तप उपरांत सतारहां आयोजन कौड़ी काल तक राज करने का वरदान उनसे पाया। साहिब सत्तपुरूष जी के निज सुरति अंश हंसों को निरंकार ने भ्रमण करवाने हेतु त्रिलोकी विस्तार रच डाला। वर्तमान युग तक तीन आयोजन कौड़ी काल समाप्त हो चुका है और चौथी आयोजन कौड़ी काल अभी प्रारम्भिक अवस्था में है।

निरंकार ने इस विशाल विक्राल महाकाल रूपी पर मोहिणी माया व मन की सत्ता का विस्तार कर महां भ्रमजाल रूपी सृष्टि रच डाली। निरंकार ने आद्य–शक्ति संग मिल कर अपनी निज ऊर्जा से त्रिदेव प्रकट कर दिये तथा इस त्रिलोकी की व्यवस्था को सुचारू ढंग से चलाने के लिए अनगिनत देवी देव रच डाले। निरंकार की इस क्रूर माया के मोह पाश में फंसा 'हंसा' माया में ऐसा डूबा कि मायाधारी होते ही आत्म रूप कहाया। निरंकार ने इस सब के उपरांत स्वंय को साहिब सत्तपुरूष जैसा दर्शाने के लिए स्वंय को सुन्न में समाहित कर दिया व वहीं से जगत में मन माया रूप का विस्तार कर दिया। जिस से अरबों खरबों वर्ष ही नहीं, मानव तीन आयोजन कौड़ी काल बीत जाने पर भी मुक्त ना हो पाया। निरंकार की माया में बंधा मानव मन वशिभूत स्वंय को हंसा तो दूर, आत्मां भी नहीं समझ रहा व स्वंय को काया समझ अपने निज को भूला हुआ, निरंकार की मन तरंगों अर्थात इंद्रियों का गुलाम बना असहनीय दुखों और कष्टों को झेले जा रहा है। यह सारी त्रिलोकी की गतिविधियां आत्मां, सुरति से चलायेमान हैं, यह मन–काया व त्रिलोकी बिन आत्म निर्जीव अर्थात गतिहीन हैं। मन तरंग रूपी सम्मोहनी माया आत्म को भ्रमित कर सबै गतिविधियां आत्म सुरति से करवा रही है, बिन आत्म सब जग सूना। जगत में मनुष्यों को जो भी पथ प्रदर्शक या गुरू मिलते हैं वे स्वंय भी इन इंद्रियों से मुक्त नहीं होते तो इन्हें कैसे मुक्त करा सकते हैं तभी तो इनका आवागमण नहीं मिट पाता।

ऐसा भी नहीं कि निरंकार रचना की महानता कहीं भी कम हो। ज़रा इसकी महानता तो देखें ! निरंकार भगवान ने जीवों के लिए नाना प्रकार की सुख सुविधायें जैसे खाने के लिए अनगिनत वनस्पतियां व फल, रहने को अदभुद वसुन्धरा, पीने को मीठा जल और जीवों को भौग विलासों के पदार्थों के साथ साथ जीने के लिए अनुकूल वातावरण भी प्रदान किया। इसके साथ साथ रिश्ते नाते ही नही, चांद सूरज, ग्रह नक्षत्र व सारे का सारा ब्रह्मण्ड भी

मानव के सुख सुविधाओं हेतु रच डाला। तभी तो मानव हंसा रूप भूला मन माया वश पड़ा घौर कष्ट क्लेशों व सुख दुख को सहे जा रहा है।

ऐसा भी नहीं की निरंकार ने जीवों के लिए मोहपाश रूपी नगरी ही रची हो, बलिक मुक्ति का साधन अर्थात समय समय पर सहज सतमार्ग के संपूर्ण संत व सतगुरू भी इस धरा पर जीवों को मोक्ष प्रदान करवाने हेतु आते रहे और आगे भी आते रहेगें। इसी क्रम में वर्तमान युग के संत शिरोमणि साहिब श्री 'वे नाम' परमहंस जी भी जीवों को सतपुरूष जी की प्रेरणा से उनके उद्धार हेतु लगातार प्रवचनों व सत्संगों में साहिब सतपुरूष जी की महिमां का गुणगान व ब्खान कर रहे हैं। जग जीवों का मोह को ना त्यागना तथा मोक्ष मार्ग की ओर ना चलना ही साहिब सतगुरू श्री 'वे नाम' जी की व्यथा का एकमात्र कारण है। जीव निज के लिए माया मांगे व मोक्ष पद पर नां चले, इतने प्रयासों पर भी मानव स्वंय विनाष पथ पर जाए तो बताऐं निरंकार कहां दोषी ? निरंकार व उसके मन रूप को कौसना सर्वथा अनुचित है। इस त्रिलोकी प्रपंच रचना के बाद भी निरंकार भगवान आदर के पात्र हैं।

मानव अपनी करनी का स्वंय कसूरवार है।

—0—